मध्यप्रदेश के लोक नृत्य एवं कथक नृत्य का तुलनात्मक अध्ययन

नेहा विश्वकर्मा. (शोधार्थी) (ugc net srf)

शा. मानकुंवर बाई कला एवं वाणिज्य स्वशासी महिला महाविद्यालय, जबलपुर ।

.....

प्रस्तावना

लोक नृत्य की उत्पत्ति प्रकृति से मानी गई है एवं इस का भरण पोषण एवं संवर्धन वसुंधरा की गोद में हुआ है लोकनृत्य की उत्पति दो शब्दो के योग लोक+नृत्य से बना है जिसमे लोक अर्थात जनसाधारण जिन्हें हम साधारण मनुष्य कहते हैं एवं नृत्य का अर्थ नाच से है। पौराणिक कथाओं के अनुसार लोंक नृत्य की उत्पति नटराज भगवान शिव के तांडव नृत्य एवं माता पार्वती की लास्य नृत्य से मानी गई है। किंतु लोक नृत्य सभी शास्त्रीय नृत्यो में सबसे प्राचीन एवं आधारभूत नृत्य है। केवल लोक नृत्य हर्ष, उत्साह, उत्सव, सामाजिक एकता, सहिष्णुता, भाई चारा एवं अपनी पारंपरिक रीति-रिवाजों एवं मान्याताओ को संजाए हुए हैं। लोंक नृत्य में नदी की भांति प्रवाह, चंचलता, नवरस, भक्ति भाव, एवं एकता का भाव कूट कूट कर भरा है क्योंकि लोक नृत्य हमेशा समूह में ही किए जाते हैं। इसके लिए किसी मंच विशेष की आवश्यकता नहीं होती है । यह शास्त्रीय नृत्य पद्धति के नियमों का पालन नहीं करता। जिस तरह शास्त्रीय नृत्य का प्रदर्शन मंच एवं किसी प्रांगण में किया जाता है। किंतु लोकनृत्य अपने आप में पूर्णता स्वंतत्र होता है। यह काल, अवधि, पूर्वरंग, वादक एवं नर्तक की संख्या के नियमों से परे है। अतः हम यह कह सकते हैं कि लोक नृत्यों को किसी भी नियम बांधना संभव नहीं रहा हैं। मध्यप्रदेश में विभिन्न आदिवासी जनजातियों एवं कुछ अनुसूचित जातियों एवं पिछड़ी जातियों के द्वारा अनेक प्रकार के लोक नृत्यों का प्रचलन आदि काल से वर्तमान काल तक अपने शुद्ध रूप को ग्रहण किए हुए निरंतर चला आ रहा है।

ईश्वरीय अराधना -

लोक नृत्य एवं शास्त्रीय नृत्य दोनों भाक्ति भावना रंग में रंगे हुए हैं दोंनो की शैलियां एवं स्वरूप अवश्य भिन्न हो सकता है किंतु उद्देश्य एक ही है मध्य प्रदेश के लोक नृत्य में कई ऐसे लोकनृत्य हैं वन देवता, आदिवासी जनजाति के प्रमुख देव बड़ा देव शिवजी कृष्णा राधा राम एवं कबीर दास जी के भजनों पर नृत्य किया करते है। उसी प्रकार सभी शास्त्रीय नृत्यों मैं वंदना एव मंगलाचरण का उतना ही महत्व है शास्त्रीय नृत्य का आरंभ में वंदना एवं मंगलाचरण से किया जाता है। जो कि आवश्यक भी है नाट्य शास्त्रीय नृत्य आरंभ करने के पहले ईश्वर का आर्शीवाद प्राप्त होना अत्यंत आवश्यक है। पूजा परब नृत्य, गौड़ जाति का पूजा नृत्य, झंडा पूजन, सरना पूजा, कलसा नृत्य ,जवारा ,नृत्य, फूल पाती नृत्य, भोपा नृत्य, रजवाड़ी नृत्य, रजवाड़ी नृत्य, आड़ा नृत्य, मटकी नृत्य आदि। शास्त्रीय नृत्य में गुरू वंदना, सरस्वती वंदना, कृष्ण वंदना, द्रुर्गा स्तुति एवं अनेक भजनों भावपूर्ण नृत्य किया जाता है।

नर्तन पक्ष का तुलनात्मक अध्ययन -

लोक नृत्य का आगे के चलन सर्वत्र ही स्वतंत्र शैली का रहा है लोक नत्यों में अंगो का संचालन शास्त्रीय नृत्य की भांती बंधा हुआ नहीं होता। वर्तमान समय में शास्त्रीय नृत्य में विशेषकर कथक नृत्य में अनेक प्रयोग किए गए हैं। किंतु लोक नृत्य प्राचीन काल से वर्तमान समय में शास्त्रीय नृत्य में विशेषकर कथक नृत्य प्राचीन काल से वर्तमान समय में भी शुद्ध एवं मूल रूप में है। प्रत्येक नृत्य पर अवश्य पड़ता है जिससे अछूते हमारे लोकनृत्य भी नहीं रह सकते। कालांतार में प्रतिस्पर्धा एवं आगे बढ़ने की होड़ मे लोक नृत्य मे परिधानों की विविधता एवं सुंदरता एवं रंगमंच पर पहुंचने के कारण इसकी प्रस्तुतिकरण में भी समय अनुसार काफी परिवर्तन आया है। एवं लोक नृत्यों पर सिनेमो का प्रभाव स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है।

प्राचीन काल में जब नृत्य अपनी स्वतंत्र अवस्था अर्थात लोक नृत्य शैली का हुआ कर था जहां से सारे शास्त्रीय नृत्यो की उत्पत्ति मानी गई है जो कि दृष्टव्य भी है कत्थक के महान गुरूओ के चलचित्र का अवलोकन कर हम यह बात समझ सकते हैं की शास्त्रीय नृत्य एवं लोक नृत्य एक ही माता-पिता की दो अलग संताने है जिनका स्वरूप रंग रूप, चलन, गति, अवश्य भिन्न है किन्तु इनकी आत्मा एवं उद्देश्य एक ही है।

[४]लोकनृत्य गम्मतनाचा लोक नृत्य में पुरूष स्त्री बनकर सर पर लोटा रखकर नृत्य करते हैं कथक नृत्य के समान ही होता है जैसे कथक नृत्य में लहरा बजाया जाता है उसी प्रकार गम्मत नाचा में भी उसी प्रकार हारमेनियम के द्वारा स्वर लहियों तबला हारमोनियम ढोलक के साथ नर्तक दुगुन चौगुन में पद संचालन के साथ नृत्य का आरंभ होता है। एवं कथक नृत्य की भांति भ्रमरी का भी प्रदर्शन किया।

[३]मध्यप्रदेश के राही लोक नृत्य में भी कत्थक की झलक देखने को मिलती है राई नृत्य में एक विशेष प्रकार के तिरछे चक्करो का विशेष महत्व है जो राई की विशेषता भी है।

मटकी नृत्य – यह मालवा का प्रसिद्ध नृत्य है जिसेमें नर्तकी अपने सर पर एक एवं कई मटके रखकर संतुलन बनाकर रहते करती जिसकी झलक हमें बनारस घराने की कत्थक नृत्य में साफ़ दिखाइ देता है। बनारस घराने के सुप्रसिद्ध नृत्य गुरू नटराज गोपी किशन जी भी सिर पर कलश रखकर एवं परांत के उपर नृत्य किया करते थे। एवं उछलना कूदना मुड़ना झुकना कालांतार में गोंपी किशन नृत्य किया करते थे। एवं उछलना कूदना मुड़ना झुकना कालांतर में गोपी किशन नृत्य शैली के नाम से प्रचलित हुई। जिसका निर्वाह आज विशाल कृष्ण जी कर रहे हैं।

लोक नृत्य एवं शास्त्रीय नृत्यों में प्रयुक्त होने वाले वाद्य यंत्रों का प्रचलन सभी लोक एवं शास्त्रीय नृत्य में एक समान ही महत्व रखता है क्योंकि वाद्य यंत्रो का प्रचलन सभी लोक शास्त्रीय नृत्य में एक समान ही महत्व रखता है क्योंकि वाद्य यंत्रो के बिना हम किसी भी नृत्य की कल्पना नहीं कर सकते वाद्य यंत्रो के बिना हम किसी भी नृत्य की कल्पना नहीं कर सकते वाद्य यंत्रो के आभाव में प्रत्येक नृत्य प्राण रहित शरीर के समान है् लोक नृत्य में ढ़ोलक, नगड़ीया, हारमोनियम, बासुंरी, झांझ, मंजीरा, टिमकी, मंजीरा, तोड़ी, तुरही, मोहरी, पुंगी, शंखा, दफड़ा, ढोल, ठड़का, दोहरी, भील ढोल, मांदर, सींग बाजा, करतार, एकतारा, चुटकोला जैसे अनेक वाद्य यंत्रो का प्रयोग किया जाता है। उसी प्रकार शास्त्रीय नृत्य में तबला, बासुंरी, हारमोनियम, पखावज, सारंगी, सितार, मृदंग, मंजीरा, शंख आदि वाद्य यंत्रो का प्रयोग किया जाता है।

[२] मध्य प्रदेश के प्रमुख लोक नृत्य-पूजा नृत्य, करमा नृत्य, सैला एवं रीना नृत्य, दशराहा, परधौनी नृत्य, बिरहा नृत्य, कहरवा, भीमा नृत्य, कोलदहकी नृत्य, अहीर नृत्य, राउत नृत्य, राई नृत्य, भगोरिया नृत्य, गरबी नृत्य, बड़वा नृत्य, डोहा नृत्य, मटकी नृत्य, गणगौर नृत्य, सुआ नृत्य, बधाई, डंडा नृत्य, नौरता नृत्य, ढिमरयाई नृत्य, केमाली नृत्य, कलसा नृत्य, आड़ाखड़ा रजवाड़ी नृत्य, बरेदी नृत्य, आदि मध्य प्रदेश के प्रमुख लोक नृत्य है। एवं भारत के प्रमुख शास्त्रीय नृत्य - कथक, भारतनाट्यम, मोहिनीअट्टम, कुचिपुड़ी, कथकली, सत्रिय, मणिपुरी एवं ओड़सी है।

अतः हम यह कह सकते हैं कि लोकनृत्य एवं शास्त्रीय नृत्य एक ही वृक्ष की अलग- अलग शाखाएं हैं जो एक दूसरे से इस तरह जूड़े हुए हैं जिन्हें एक दूसरे से विभक्त करना संभव नहीं यद्यपि समय के परिवर्तन के साथ वातावरण परिस्थितियां परिवेश एवं परिवर्तन के क्रम से विचरण करने के अनेक नित्य गुरूओं का संरक्षण मिलने एवं स्थानीय भाषा, धार्मिकता, रहन-सहन एवं रीति रिवाज एवं उस नृत्य कृतियों में परिवार्तिक कर दिया आज जिस नृत्य को हम शास्त्रीय नृत्य कहते हैं हजारो सालो पहले यह नृत्य भी लोक नृत्य हुआ करता था या हम यह भी कह सकते है कि जब शास्त्रीय नृत्य भी लोक नृत्य हुआ करता था या हम यह भी कह सकते हैं कि जब शास्त्रीय नृत्य का अस्तित्व ही नहीं था तब केवल लोक नृत्य ही हुआ करते थे।

संदर्भ ग्रंथ सूची

१. कथक ज्ञानेश्वरी पंडित तीरथ रामआजाद
२. मध्य प्रदेश के लोक नृत्य शरीफ मोहम्द
३. अनुकंपन लघु फिल्प
४. पंडित सुनील वैष्णव जी के साक्षात्कार द्वारा प्राप्त जानकारी।
५. लोक संगीत सामान्य स्थिति एव संरक्ष्ण डॉ अरविंद कुमार शोध पत्र